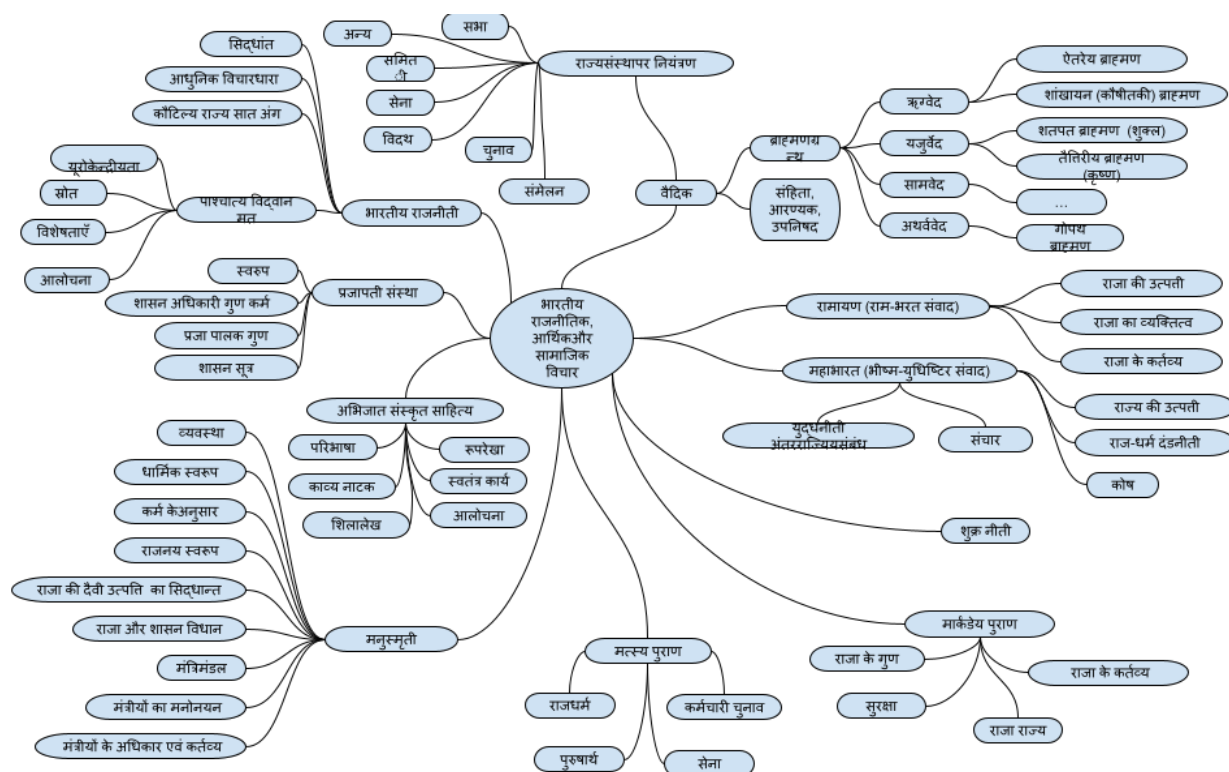


Indian Political, Economic and Sociological Thoughts

MCKS Sem 1 Course 2 Notes



भारतीय राजनीती

सिद्धांत

परिभाषा:

- तर्कपूर्ण ढंग से संचित और विश्लेषित ज्ञान समूह.
- दर्शन मी सत्य और ज्ञान कि खोज, अगर राजनीतिक विषय है तो 'राजनीती दर्शन'
- राजनीतिक सिद्धांत उसका हिस्सा

प्रश्न:

- राज्य का स्वरूप और प्रयोजन क्या है?
- संगठन के लक्ष्य और पद्धतियों के बारे में निर्णय कैसे करे?
- राज्य और व्यक्ति के बीच मी संबंध क्या है?

तत्व:

- वेद और सनातन धर्म की रक्ष के लिये
- यह देखना है कि समाजके सभी अंग अपने अपने कर्तव्य का पालन करें और दूसरे के कर्तव्य में बाधा नहि
- सर्वमान्य नियमोंके अनुसार रहे
- दंड निति दूषित तो समाज दूषित
- विद्या, यज्ञ एवं दान का रक्षण और संवर्धन

आधुनिक विचारधारा

- नई प्राथमिकता: व्यक्ती स्वातंत्र्य और राज्यके साथ उसका संबंध
- अभिजन समूह, राजनीतिक दल , आदी व्यवस्था
- मानवी समाज कि एकता और अखंडता या फिर समाज कि सामूहिक आवश्यकता

कौटिल्य राज्य सात अंग

- राज्य सात अंगो से बना है : स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड , मित्र
- चिंतन: राजनीती, स्वतंत्रता, न्याय, संपत्ती, अधिकार, कानून, ई .
- स्वामी: उच्च कुल में जन्मा, धर्म मी रुची, दूरदर्शी, सत्यवादी, महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, शिक्षणप्रेमी
- अमात्य (मंत्री): योग्य और निष्ठावान (रिश्तेदार, सहपाठी , परिचित, शराबी, प्रमाद, अहंकारी ना हो)
- जनपद: जनता + भूमी. कर चुकाने वाली और संपन्न, गाव में १००-५०० घर होने चाहिये
- दुर्ग: राज्य कि सुरक्षा. भोजन पानी और गोला बारूद कि व्यवस्था,
 - औदक: चारो और से पानी
 - पर्वत: पत्थरों से निर्मित
 - धान्वं: जल और घास रहित भूमी मे
 - वन: चारो और दलदल या झाडी
- कोष: निरंतर वृद्धी करना चाहिये, कृषक(१/६), व्यापारी (१/१०), पशु व्यापार (१/५०)...
- दण्ड: राजा कि शक्ती: सेने, गुप्तचर, पुलिस, न्याय व्यवस्था उनको अच्छा वेतन
- मित्र: पड़ोसी राज्य. वंश-परंपरागत , विश्वसनीय, हितैषी

पाश्चात्य विद्वान मत

यूरोकेन्द्रीयता

- भारतीय दर्शन में चिंतन का अभाव - मैक्सम्युलर, ब्लूमफिल्ड वर डर्निंग
- भारतीय विचार युनानी विचार 'रिपब्लिक' प्लेटो के पाहिले

स्रोत

राज्यशास्त्रपर पृथक ग्रंथ

- वैदिक, पुराण, जैन-बौद्ध साहित्य ...
- कौटिल्य, मनु , बृहस्पती, याज्ञवल्क्य, शुक्र, पराशर
- सोमदेवसूरी (नीतिवाक्यामृतम), मित्रमिश्र (वीरमित्रोदय)...

विशेषताएँ

- राज्यशास्त्र के विविध नाम : अर्थशास्त्र, राजधर्म, दंडनीती, नीतिशास्त्र, प्रशासन शास्त्र, राजशास्त्र...
- न आदर्शवादी किंतु व्यवहारवादी
- दंडनीती का महत्व
- विशेष शब्दावली
- राजनीतिक + सामाजिक समन्वय
- धर्म + राजनीती संबंध
- राजनीतिक ग्रंथोंमें एकवाक्यता, आम सहमती
- परमात्मा द्वारा रचित
- राज्य एक आवश्यक और उपयोगी संस्था, प्रमुखता
- मोक्ष प्राप्ति का आधार
- राजा को सर्वपरी स्थान
- अनेक छोटे राज्योन्का अस्तित्व
- विचारोंकी अपेक्षा संस्थाओं पर बल

आलोचना

- राजनीती को धार्मिक और अध्यात्मवादी पर्यावरण , स्वतंत्र नहीं
- श्वेच्छाचारी शासन, अव्यावहारिक और आदर्शवादी

प्रजापती संस्था

स्वरूप

- प्रजा के अधिकार अधिक : राष्ट्रपती/प्रजापती कि नियुक्ती , हटाना
- समाज कि सेवा का धर्म
- व्यक्ती और समाज के कर्तव्य नियत.
- काल प्रजा उत्पन्न करता है -> प्रजा उन्नत होती है, काल प्रजा के माध्यम से पालनकर्ता का चुनाव करती है
- प्रजापती सबसे बलवान हो, ब्रह्मचारी/योगी हो, सबके आदर पात्र हो.

शासन अधिकारी गुण कर्म

- प्रजा के साथ मिलजुलकर रहे
- सत्य विचार, सत्य भाषण , पवित्र
- वृषा (बलवान), इंद्र (विजेता), हरी (दुःख निवारण), पवमान (पवित्र), इंद्रू (प्रसन्नता दे), प्रजापती (सुखी प्रजा)

प्रजा पालक गुण

- न्यायदान : सत्य असत्य का निर्णय
- कोषाध्यक्ष : कर वसुली
- बल वृद्धी: ज्ञान बल , वीर बल , कर्म बल , कृषी बल ...
- तेज, यश और अन्न देनेवाला

- मातृभूमिको उपजाऊ बनाना
- तैत्तिरीय अधिकारियोंका पोषण
- प्रजाजननकेलीये घर
- जलस्थान कि स्थापना
- रमणीय मातृभूमी
- व्यापार व्यवहार के लिये पर्याप्त धन और रुची
- प्रजा के साथ मिलकर आनंद में रहेना
- परस्पर ध्यान देना
- नगरी का निर्माण
- विविध कार्य करने वाला

शासन सूत्र (३३)

- राजा स्वयंभू है
- व्यक्ती नाश होने वाली, पर राष्ट्र अमर है
- ...

मनुस्मृती

व्यवस्था

- परिभाषा: कार्यो और नियमों को किसी निश्चित स्थान पर सुविचारीत करना
- दृढ तथा आदर्श हिंदू राज्य व्यवस्था दी

धार्मिक स्वरूप

- धर्म प्रधान शासन, सर्वोत्तम शासन
- दो उद्देश: अभ्युदय, निःश्रेयस

कर्म केअनुसार

- ब्राह्मण : धर्मशास्त्र कि रक्षा , शिष्योंको पढाना (अन्य वर्ण ये नही कर सकते)
- क्षत्रिय: प्रजा कि रक्षा, दान देना , प्रजा को सुखी रखना
- वैश्य: पशु कि रक्षा, व्यापार
- शूद्र: सेवा करना

राजनय स्वरूप

- विदेशो में भेजे जाने वाले प्रतिनिधी
- कूटनीतिक काम
- दूत, राज्यों के बीच मी समन्वय

राजा की दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त

- Someone from the group, can be vaidya, purohit, mantrik
- Like grihapati of family, he has authority to command, penalize, and sell people; same got extended to 'kul', then to 'sangh' then to state.
- कोई उसका अपमान ना करे
- अत्यंत पवित्र , अष्ट देवता के गुण
- परंतु उसका देवत्व उसके शिष्ट एवं उच्च आचरण पर निर्भर

राजा और शासन विधान

- तीन प्रमुख कार्य हैं
 - राजनयिक (प्रबन्ध अर् वा कार्यकारिणी)
 - सम्बन्धी
 - न्याय सम्बन्धी एवम् विधान निर्माण सम्बन्धी कार्य
- दण्ड संपूर्ण प्रजाओं पर शासन करता है, सबकी रक्षा करता है, सब प्राणियोंके के सोने पर वह अकेला जागता रहता है, विद्वांनों ने धर्म को दण्ड हेतु माना है।
- यदी राजा दण्ड का उचित प्रयोग करता है, तब वह धर्म और काम से समृद्ध माना जाता है, इसके विपरीत कामी, क्रोधी तथा क्षुद्र, नृत्य, दण्ड के द्वारा ही मारा जाता है
- राजा को इसप्रकार की व्यवस्था करनी चाहिये कि उसके राज्य में सर्वत्र शांतता हो
- राजा के विशेष अधिकार: जमीन के अन्दर गड़ी हुई संपत्ति

मंत्रिमंडल

- विस्तृत राज्य जो कठीण कार्य है, उसे अकेला राजा सुव्यवस्थित रूप से नहीं चला सकता। इसलिये राज्य मंत्रियोंकी नियुक्ती
- मंत्री परिषद की सदस्यता के लिये विविध विषयों के अलग- अलग विशेषता होनी चाहिये
- मंत्री मण्डल में विशेष लोग विचार विमर्श के लिये बैठते हैं और मण्डल की अधिकांश बातें गोपनीय रखकर, बल्की उसे सीधे कार्य के रूप में परिणीत कर दिये जाते हैं

मंत्रियों का मनोनयन

- औपनिवेशिक सिद्धान्त: परंपरागत सेवकों में से सदस्य नियुक्त
- सम्यक शास्रजता : विषय का पूर्ण विश्वास, विधिवत प्राप्ती , नवं योजना निर्माण
- उच्च कुल कि वंशावली : रक्त कि परंपरा (उपरी दोनों के लिये)

मंत्रियों के अधिकार एवं कर्तव्य

- अपने अधिकार क्षेत्र का संचालन
- राजा को गोपनीय रिपोर्ट

वैदिक

सामाजिक और राजकीय जीवन

- ऋग्वेद:
 - कुटुम्ब -> जन्मन्/कुल -> विश -> जन
 - विश most powerful group, had own army, leader is called विशपति
 - जन - many विश, leader जनपति
- पत्नी और पत्नीयोंको को परदादाओं और माताओं के साथ रहना चाहिए
- नई दुल्हन को परिवार में गौरव का स्थान था और नेतृत्व की जिम्मेदारी
- पर्याप्त संख्या में पुत्र और पुत्रियोंके के जन्म के बाद अपने पति को भी अपना पुत्र के रूप में माना जाए

राज्यसंस्थापर नियंत्रण

राज्यसंस्था का स्वरूप

- 3 groups
 - ब्रह्म : पुरोहित, यज्ञ की जिम्मेदारी
 - क्षत्र: युद्ध नेतृत्व, समाज में अनुशासन
 - विश : सर्वसाधारण लोग
- raja gets selected from good family of क्षत्र
- raja means leader of a group, purohit is also important. Raja selected or elected

राजा का अभिषेक

- At that time, he used to say "in my kingdom all trees, humans, should be free from disease, disasters. Public should be free from fear and destruction"
- This ceremony was done by purohit, that is why Purohit became important

राजा का चयन

From common people directly or via कुलपति / विशपति

सभा

- A group of people (elder / learned) chosen by the common people of the village
- People coming together and discussing for arriving at a favorable decision.
- Sister of Samiti.
- Prayer: May all those that sit assembled in you, utter speech in harmony with me.
- समाज भी राज्यशासन का उन निर्णयोंको मान्यतायुक्त समर्थन

समिती

- Group of people at the capital of the Kingdom.
- सम्+इति । Meeting together – Assembly of commoners. Chief is called ईशान
- सभा से जादा समिति अधिक अधिकार संपन्न और व्यापक होती थी।
- Functions: - election of king, discuss matters of state. King used to attend the Samiti and it was necessary for him to do so. people were anxious to make
- speeches agreeable to the assembled ones
- राजा समिति की कितनी सहाय्यता करता है इस बात पर राजा की प्रतिष्ठा निर्भर होती थी
- राजन समिति को अनुकूल हो इसके लिए प्रयत्नशील था.
- ज्ञानसम्पन्न ब्राह्मणोंका समिति पर विशेष प्रभाव रहता था। ब्राह्मण जन्म से प्राप्त जाती नहीं थी। ब्राह्मण के गुणों से युक्त कोई भी इंसान ब्राह्मण कहलाता था।
- समिति का निर्णय न चलने पर राजा / सरदार पदच्युत भी हो सकता था।

विदथ

- The religious life was organized through Vidatha.
- It is the parent folk-assembly from which Samiti, Sabha and Sena differentiated.
- Like Planning Commission or think tank
- यज्ञ के लिए महत्त्वपूर्ण
- विद्या व्यासंगी और योद्धाओंकेलिए प्रयोगस्थान
- विदथ सम्मलेन में विद्वद्जन, सरदार और सम्राट भी उपस्थित होते थे
- उपजाऊ जमीनकी सुपिकता वृद्धिंगत करने का शास्त्र का प्रदर्शन
- निर्णय शिफारस जैसे

चुनाव

- चुनाव नहीं, लेकिन सभा, समिति और अन्य संस्थाओंमें चुनाव था
- राजा के सामने ऐसा ध्येय था। राजा को हमेशा पद से निकलने का डर रहता था
- राजा का राजत्व प्रजा की सम्मति पर अवलम्बित

अन्य सामुदायिक संगठन

सेना

Army – A constitutional unit.

गण

समूह, झुंड और विदथ का भाग

ग्राम

कुटुम्बोंका समूह (केवल एक बस्ती नहीं)
घूमने वाले कुटुम्ब भी हो सकता है

संग्राम

अनेक ग्रामोंका समूह

परिषद

दार्शनिकोंका समूह

समान

उत्सव या सामाजिक मेला

संगम

पुरोहित और उपाध्यायोंका समूह

यज्ञ

सामाजिक- धार्मिक संस्था के लिए उच्चकुलीन और सुसंस्कृत लोगोंका समुदाय

रामायण (राम-भरत संवाद)

राजा की उत्पत्ती

वंशागत परंपरा

- राजपद की अनुवांशिकता टूट
- फिर भी उत्तराधिकारी की नियुक्ति के लिए मंत्री एवं पौरजनपद का समर्थन आवश्यक

जेष्ठ पुत्र का अधिकार

- जेष्ठ पुत्र की अनुपस्थिति में किसी अन्य पुत्र को राजा बनाने का विचार जैसे राम के अनुपस्थिति पर भरत
- जेष्ठ पुत्र की मृत्यु के बाद अगला पुत्र राज्याधिकारी

योग्य व्यक्ति

- राजा का जेष्ठ पुत्र अगर अयोग्य तो उसका नाम प्रस्तावित नहीं
- प्रजापालन की क्षमता और जितेन्द्रिय होना जरूरी

राजा का व्यक्तित्व

रूपवान

अनुपम, विशाल कंधे, महाबाहु, विशालवक्ष स्निग्ध वर्ण

बुद्धिमान और विद्वान्

वेद वेदांग तत्त्वज्ञ , स्थिर प्राज्ञ , अप्रमादी

वीर

सुविक्रम, महविर्यवान, पराक्रमी

नीतिज्ञ

धर्मज्ञ, सत्यसंघ, क्षमाशील , मृदु

राजा के कर्तव्य

अपने प्रति

- पाप कर्मोंसे दूर
- व्यसनोंका त्याग
- नास्तिकता-असत्यभाषण-क्रोध-प्रमाद का त्याग

प्रजा के प्रति

- प्रजा की रक्षा, धर्म की रक्षा
- सदैव प्रजा हित, आपत्ति में सहाय्यता
- चारो वर्णोंके अनुसार नियुक्ति और उनके हितार्थ काम

अमात्य और अधिकारियोंके प्रति

- श्रेष्ठ लोगोंकी नियुक्ति , उनके साथ परामर्श
- पूरा काम उनके ऊपर न छोड़े , व्यक्तिगत ध्यान दे

राम-भरत संवाद Part of Ayodhya Kanda (Sarga 100)

- Almost every verse contains the word – कच्चित् – hence called as Kaccid Sarga
- Rama's advice to Bharata as regards to the duties of a king and polity under an ideal monarchy.
- When Rama went for exile and Bharata came to know about it, he followed Rama along with his paraphernalia to bring his elder brother back to the throne.
- This conversation takes place in the forest.
- I hope that ministers who are valiant like you, learned, masters of their senses of noble birth and skilled interpreting internal sentiments by external gesture, are assigned to you.
- I hope that you do not deliberate alone nor indeed with numerous men. I hope your decision
- arrived at by you through such deliberation does not flow to the public (even before it is carried out)

महाभारत (भीष्म-युधिष्ठिर संवाद)

राज्य की उत्पत्ती

- मनुष्य ज्यादा उत्पादन के बाद, संचय करने लगा, दूसरोंका छीनने लगा, धर्म का हास होने लगा
- लोगोंकी मांग पर ब्रह्मा ने मनु को पृथ्वी पारा राजा बनाने को कहा.
- No king, no penalties,
- He refused, and people negotiated that he won't be responsible for their sins, and will get tax, he agreed.

राज-धर्म दंडनीती

- राजा का मुख्य कर्तव्य धर्म की रक्षा और प्रजाहित
- प्रजा के जीवन का मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति
- राज्य पांच माध्यमोंसे समृद्ध होता है
 - दुर्ग की रक्षा
 - युद्ध
 - न्याय के साथ धर्मानुशासन
 - नीतियोंपर विचार विमर्श
 - लोगोंके कल्याण हेतु कार्यरत
- विधि के स्रोत
- देवसम्मत्
- आर्य स्रोत
- लोकसम्मत्
- संस्थासम्मात्
- सार्वजनि हित के लिए दण्डनीति (जैसे माता पिता)
- दंड के प्रकार
 - दिघदण्ड (निंदा)
 - वाञ्जु दंड (मौखिक फटकार)
 - अर्थदंड
 - वधदंड
- आपद (युद्ध, आपत्ति) समय में साधारण कानून निलंबित करना चाहिए, जनता पर अतिरिक्त कर लगाना प्रजा को जानकारी दो.
- सुशासन के लिए ३३ मंत्री
 - ४ ज्ञानी ब्राह्मण
 - ८ शस्त्र कुशल क्षत्रिय
 - २१ व्यापार कुशल वैश्य
 - ३ शुद्ध हृदय शूद्र

कोष

- राजस्व प्राप्ति के स्रोत
 - बली : अनाज १६.५ %

- शुल्क: आयात निर्यात
- दंड: अपराधियों से
- बदले में राजा सुरक्षा देता है

संचार (communication)

- अधिपतियों की नियुक्ति: १/२०/१००/१००० गावों से कार्यों का ज्ञान
- जानकारी संचय करके राजा के पास

युद्धनीति अंतरराज्यसंबंध

- अगर ब्राह्मण दो युद्ध करने वाले गुटों में शांति का प्रस्ताव लाते हैं, तो युद्ध छोड़ना चाहिए
- युद्ध का अनुकूल समय चैत्र तथा अग्रहण्य (?) है. खेत में अनाज बहुत होता है, गर्मी या ठंडी कम होती है
- जब शत्रु संकट में है तो आक्रमण करना चाहिए
- शत्रु का पूर्ण दमन आवश्यक है
- मित्र चार प्रकार के:
 - सहार्थ: साथ में लड़ेंगे, विजय के बाद आपस में बाँट लेंगे (साशंक)
 - भजमान : पिता की और से रक्त सम्बन्ध से जुड़े (श्रेष्ठ)
 - सहज: माता की और से रक्त सम्बन्ध से जुड़े (श्रेष्ठ)
 - कृत्रिम: मित्रता एक उपहार (साशंक)
- दुर्ग के ६ प्रकार: मरू , माहि, गिरी, मनुष्य , मृत्ति , वन

मत्स्य पुराण

राजधर्म

- राज्य का पूरा अस्तित्व राजा के ऊपर, मतलब राजा नष्ट तो राज्य नष्ट
- राजा की सुरक्षा की सखोल व्यवस्था: भीड़ से दूर, भोजन परीक्षा के बाद, अज्ञात जलाशय में न उतरना ई।

सैनिक व्यवस्था

- राज्य की रक्षा: दुर्ग , अस्त्र संग्रह, तेल और ईंधन संग्रह
- सेना के लिए खाद्य और घायलों की चिकित्सा के लिए औषधि

कर्मचारी चुनाव

- सेनापति: राजा का परम सहायक, कुलीन, धनुर्विद्या पारंगत, घुड़सवारी प्रवीण, ...
- दूत: दूसरों के भाव समझे , राज्य का प्रतिनिधि, विविध भाषा पारंगत
- अङ्गरक्षक : हर तरह से मुस्तैद, बहादुर, दृढ़ राजभक्त, धैर्यवान
- आय व्यय विभाग: देश की उपज से परिचित
- रसोई घर का अध्यक्ष : पाक शास्त्र और चिकित्सा क्षेत्र पारंगत

पुरुषार्थ

- दैव और पुरुषार्थ में क्या बड़ा?
- जो श्रेष्ठ आचार वाले हैं वो प्रतिकूल दैव को भी परास्त कर सकते हैं
- दैव , पुरुषार्थ और काल , तीनों चाहिए

मार्कंडेय पुराण

राजा और राज्य

- राज्य के सप्तांग: स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड , मित्र
- राजा: क्षत्रिय, कुलीन वंश का
- राज्याभिषेक : प्रथम वाला इष्टजन करते हैं, पुरे नगर में घोषणा
- शिक्षा: योग्य ऋषिके पास

राजा के गुण

- राजा का नाम “षाड्गुण्यविदितात्मा”: सन्धि , विग्रह, यान, आसन , द्वैधीभाव, समाभाव
- सत्यवादी
- ज्ञाता
- दयावान
- योगी
- नीतिज्ञ

राजा के कर्तव्य

- प्रजाहित, प्रजारंजन
- त्रुटिपूर्ण काम के लिए दण्ड
- विरोधियोंसे युद्ध
- संचयी, व्यापनशील
- व्यसनोंका त्याग
- चरित्र शिक्षा
- आचरण: दान करना (इंद्र), सूक्ष्म कर ग्रहण (सूर्य), समदर्शी (यम), मधुर व्यवहार (चन्द्रमा), गुप्त भाव से बंधू चरित्र खोज (वायु)
- प्रजा पालन के लिए ऋषि मुनि से आशीर्वाद
- क्षय-वृद्धि का ज्ञान
- शरणागत की रक्षा
- कर ग्रहण
- वेतन: राजा कवेतन पंडित निर्धारित करते हैं, आय का १/६
- ढिंढोरा पीटना
- उचित न्याय व्यवस्था

सुरक्षा

- सेना : पैदल, हाथी - घोड़े
- रक्षक: चोर डाकुओंसे संरक्षण
- युद्ध: बदला लेने के लिए,
- अस्त्र: प्रचण्ड , आग्नेय, संवर्तक, कल, मुशल

शुक्र नीती

- दो हजार श्लोक, हिन्दू शासन
- दण्डनीति:
 - आन्वीक्षिकी: न्यायशास्त्र, वेदांत
 - त्रयी: धर्म-अधर्म, कामना, मोक्ष
 - वार्ता: अर्थ-अनर्थ
 - दंड : न्याय-अन्याय
- सामाजिक व्यवस्था : वर्ण और आश्रम व्यवस्था
- राज्य: राज्य वृक्ष का मूल राजा, मंत्री डालें , सेनापति शाखा, सेना पते, प्रजा फूल, भूमि बीज
- राजा: सबसे महत्वपूर्ण, राज्य रूपी शरीर का राजा सर, और जड़
- राजा के प्रकार: सत , रज, तम
- राजा का वृत्त (आचरण)
 - दुष्टोंको दंड
 - प्रजा का पालन
 - राजसूय अदि यज्ञोंका करना
 - न्यायसे कोष बढ़ना
 - राजाओंको करा दाता बनाना
 - शत्रुओंका मर्दन
 - दान देना
 - भूमिका विस्तार
- मंत्री परिषद् : ८ मंत्री: सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राङ्गविवाक , प्रतिनिधि, दूत
- कर पद्धति : आय का १/४ सेना पे, १/१२ ग्रामप्रतिनिधि। ...
- न्यायपद्धति :
 - सुनवाई खुली में
 - राजा अकेले निर्णय न सुने
 - मुकदमोंकी सुनवाई सभ्यों, वकीलों, साक्षियों का उपयोग
 - प्राङ्गविवाक: वकील (?), पूर्व न्याय का ज्ञान
 - पंडित: कानून पारंगत
 - न्याय में सर्वप्रथम कुल - श्रेणी, गुण , अधिकारी, अध्यक्ष , अंत में राजा
- अंतर्राज्यीय सम्बन्ध : राजमण्डल , षाङ्गुण्य सिद्धांत, साम-दाम-दंड-भेद , कूटनीति

अभिजात संस्कृत साहित्य

राजनीति की परिभाषा

- राज्य सम्बन्धी निर्देशन
- ४ तत्व: भूमि, जनता, सरकार, सम्प्रभुता
- ४ कार्य:
 - धार्मिक आधार
 - व्यक्ति - समाज सम्बन्ध प्रस्थापित
 - सबकी स्वतंत्रता
 - प्रजातंत्रात्मक विधि बनाये रखना
- निति (व्यक्तिगत का उत्कर्ष) और धर्म (राज्य का उत्कर्ष) से युक्त
- अनेक नाम: दण्डनीति, राजधर्म, राज्यशास्त्र
- महत्व: राज्य की प्राप्ति, उसकी रक्षा और उन्नति

रूपरेखा

- वेदोंमें राजनीतिक तत्व:
 - ऋग्वेद (१०। १७३, १७४, राजा का प्रजासे चयन)
 - अथर्ववेद (७। ८७-८८) राजा का संवरण, (३।३, ३।४) राजा की पुनर्स्थापना
 - ब्राह्मण ग्रंथोंमें राजनीति : राजा का अभिषेक, यज्ञ
- रामायण, महाभारत में: राम-भरत संवाद, भीष्म-युधिष्ठिर संवाद

स्वतंत्र कार्य

- मनुस्मृति
- याज्ञवल्क्य स्मृति
- पराशरस्मृति
- शुक्रनीति

काव्य नाटक

- प्रतिज्ञायौगन्धरायण : भास
- रघुवंश, मालविकाग्निमित्र (कालिदास)
- हितोपदेश (नारायण पंडित)
- कादंबरी हर्षचरितमानस (बाणभट्ट)

शिलालेख

- शिवि, मालव, अर्जुनायन, कुणेर, योधेय इ गणतन्त्रोंका उल्लेख

आलोचना

- पाश्चात्य विद्वानोंकी धरना थी की भारतीय राजनीतिक विचारोंमें कमी है

- भारतीयोंने राष्ट्रियता की भावना को कभी नहीं जाना : मैक्स म्युलर